966। धर्म और अध्यात्मवाद सीमाओं में बंधे हुये नहीं हैं इनका सम्पूर्ण विश्व व ब्रह्मांड में व्यापक क्षेत्र है तथा अनादि काल से हैं और हमेशा रहेंगे ये ही व्यक्ति व समाज को पवित्रता प्रदान कर कल्याण करते हैं ।

967। सच्ची राष्ट्रीयता व स्वतंत्रता की पहचान तो अपने देश की स्वयं की भाषा का उपयोग करने में ही है जो दूसरे देश की भाषा का उपयोग करते हैं वे पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं हैं ।

968। जो पुरुष संसार को भगवान के रूप में देखते हैं वो भगवान के परम भक्त होकर संसार से तर जाते हैं जो भगवान को संसार के रूप से देखते हैं वे भगवान से विमुख होकर संसार में ही भटकते रहते हैं ।

969। ईश्वर की महिमा इतनी अपरम्पार व महान है उसका वर्णन करने के लिये न तो किसी की शक्ति है न ही किसी में इतनी विद्वता है न ही किसी में इतना सामर्थ्य है अनादि काल से ऋषि मुनियों ने महापुरुषों व विद्वानों ने उनकी महिमा का वर्णन करने का प्रयत्न किया परन्तु वो सब अब तक बौने ही सिद्ध हुये ।

970। ईश्वरीय अनुभूति युक्त व्यक्ति का हृदय प्रेम दया करुणा भक्ति व सेवा भाव से ओतप्रोत हो जाता है तथा उसके हृदय में चेतनता जाग्रत होने के कारण वह पूरे विश्व को ईश्वरमय देखता है।

971। बलवान व्यक्ति जो निर्बलों की रक्षा करने व उनकी सेवा करने के लिये तत्पर रहता है वह व्यक्ति मानवता का द्योतक है पर जो शक्तिहीनों व असहायों का शोषण करता है वह पशु के समान है ।

972। ज्ञान एक ऐसा भंडार है जिसको जितना उपयोग करोगे उतना ही बढता जायेगा ।

973। प्रारंभिक पाठशाला में जिस प्रकार बालक जाकर शिक्षा ग्रहण करता है फिर उच्च शिक्षा लेकर आगे निकल जाता है उसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में भी मंदिर प्रेरणा व आस्था के केन्द्र होते हैं भजन पूजा से प्रेरणा मिलती है और आस्था द्वारा प्रभु का मनन व ध्यान कर आत्म ज्ञान द्वारा प्रभु को पा लेता है।

974। मानवता का पुजारी ईश्वर का परम भक्त ही होता है क्योंकि उसके हृदय में करुणा दया व सेवा भाव का वास होता है ईश्वर के विमुख रहने वाला अहंकारी क्रोधी व दानव होता है।

975। पानी का जिस प्रकार अपना कोई रंग नहीं होता है जैसा भी रंग डालो वही रंग ग्रहण कर लेता है उसी प्रकार एक दिशाहीन व अज्ञानी का अपना कोई सिद्धांत नहीं रहता जैसा भी निर्देश पाता है वैसा ही कर लेता है चाहे उसके हित में हो या न हो ।

976। मृत्यु व प्रलय जिस प्रकार निश्चित है उन्हें कोई भी नहीं टाल सकता है क्योंकि यह प्रकृति का नियम है उसी प्रकार भगवान और आत्मा अमर हैं उन्हें कोई भी नहीं मार सकता है ।

977। कोई भी देश जो स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने वाला , अपनी भाषा संस्कृति को अपनाने वाला है उसका सर्वांगीण विकास होता है विश्व में आदर की दृष्टि से देखा जाता है जो देश दूसरों पर निर्भर रहते हैं अप्रत्यक्ष रूप से गुलाम ही रहते हैं उस देश की संस्कृति का कभी विकास नहीं होता ।

978। मंदिर में भगवान की सत्ता को देखने वाला साधक, सब पुरुषों प्राणियों में चेतन वस्तुओं में सत्ता देखने वाला भक्ति मार्ग पर अग्रसर, जड चेतन व सम्पूर्ण पृथ्वी व ब्रह्मांड को उसकी सत्ता से ओत प्रोत देखने वाला ज्ञानी महापुरुष सब योगियों का भी योगी है।

979। भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग भले ही दोनों अलग अलग हों परन्तु निष्कर्ष व लक्ष्य दोनों का एक ही है परम ब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार जिसके बाद कुछ भी जानने को शेष नहीं रहता है।

980। विवेक वैराग्य भक्ति और निष्काम कर्म ये सब प्रभु को पाने के लिये आधार स्तंभ हैं इन सब से मन एकाग्र होकर हृदय में पवित्रता आती है इन्द्रियां वश में होती हैं प्रभु को पाने का मार्ग सुलभ हो जाता है ।

981। जीवन में बीती अशुभ घटनाओं को लेकर क्लेश द्वारा अपना वर्तमान व भविष्य अंधकारमय व अशांत बनाता है उससे बडा मूर्ख व्यक्ति कोई नहीं है , जो उनसे शिक्षा लेता है वह अपना भविष्य शांत व सुखमय बनाता है ।

982। एक मंदिर की पवित्रता तभी तक है जब तक सच्चे भक्तों द्वारा उसका उपयोग हृदय से सत्संग पूजा कीर्त्तन भजन आदि के लिये किया जाता है बुरे कर्मों से उसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है ।

983। दो हृदयों का मिलना तभी होता है जब दोनों के विचार मिलते हैं एक दूसरे में सच्चा प्रेम तथा त्याग की भावनायें हों, एक पक्ष भी यदि उद्दंडता व घमंड से पूर्ण हो तो हृदय कभी नहीं मिल सकते, जैसे ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती, त्याग , समर्पण व सच्चा प्रेम दोनों तरफ से परम आवश्यक है।

984। निरंतर प्रेम का स्मरण भजन व आराधना करने से व्यक्ति के हृदय के सब विकार दूर होते हैं हृदय में प्रेम दया भक्तिभाव व करुणा आदि उत्पन्न होते हैं पवित्रता आती है जिससे आत्मज्ञान होता है प्रभु को पाना सुलभ हो जाता है।

985। जिसने मन वचन और कर्म से जीवन भर प्रभु को याद किया वह संसार से तर जायेगा पर जिसने संसार को ही याद किया वह डूब जायेगा ।

986। अच्छे कर्मों के लिये समय की प्रतीक्षा न करो, पीछे रह जाओगे , जीवन बीत जायेगा पर समय की प्रतीक्षा कभी समाप्त न होगी ।

987। पानी जब तक समुद्र में रहता है सब प्रकार से गंदा व अशुद्ध होता है जब उसे सूर्य की किरणों की गर्मी मिलती है तो वह शुद्ध होकर बादलों के रूप में आकाश में रहता है इसी प्रकार जब तक मनुष्य मायावी संसार में रहता है उसके हृदय के अन्दर सब तरह के दुर्गुण व विकार रहते हैं केवल सत्संग व साधु पुरुषों के सम्पर्क में आने से ही उसका हृदय गंगा जल की भाँति स्वच्छ और पवित्र हो जाता है ।

988। एक नारी के मंगल सूत्र और चूडियों की पवित्रता तभी तक है जब तक वह पतिव्रता है अन्यथा वह अपवित्र मानी जाती है अन्य उपकरण केवल श्रृंगार प्रसाधन मात्र ही रह जाते हैं ।

989। सांसारिक आसक्ति हमारे जीवन को दलदल में ही फंसाये रहती है प्रभु भक्ति की आसक्ति ही हमारा उद्धार कर सकती है।

990। हृदय में जब तक अहंकार काम कोध लोभ व मद इत्यादि का वास रहेगा कोई भी ज्ञानी व अज्ञानी प्रभु को नहीं पा सकता ।

991। सांसारिक सुखों की तलाश में रहने वाला परमार्थ का अधिकारी कभी नहीं हो सकता स्वार्थ रहित प्रभु प्रेमी ही परमार्थ के योग्य है। सभी उसे मस्तक झुकाते हैं।

992। मांसाहारी व्यक्ति व होटल चलाने वाले अपनी जिह्वा के स्वाद व पैसे कमाने के लिये न जाने कितने मासूम जानवरों की बलि कराने को प्रेरित होते हैं दोनों ही पाप के भागी होते हैं अनादि काल तक नरक के भागी होते हैं स्वयं को उस परिस्थिति में डालें तो उन्हें आभास हो सकेगा।

993। एक सामूहिक परिवार का जीवन तभी सुख शांतिपूर्ण हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति आपस में हृदय से बडों व छोटों का आदर करते हों सभी एक दूसरे के सुख दुख में मन से सहभागी हों सच्चा प्रेम व त्याग हो व कर्त्तव्यनिष्ठ हों।

994। सद्‌गुणी व पवित्र जीवन वाला सुख शांति से तो रहता ही है उसका परमार्थ भी सुधर जाता है अपराधों से घिरे जीवन वाला उसकी काली परछाईयों से मरने के बाद तक भी नहीं छूटता ।

995। एक मां अपने बच्चे के भाग्य की स्वंय विधाता होती है बचपन से ही बुरे कामों के लिये प्रोत्साहन न देकर उसे अच्छे कामों के लिये प्रेरित करना चाहिये जिससे उसका जीवन अंधकारमय न बनकर उज्जवल बने ।

996। हृदय से सत्संग भजन आराधना करने से मन जब पवित्र हो जाता है संसार बंधन सा दीख पडता है उसे मुक्ति पाने का मोक्ष पाने का संसार से तर जाने का प्रयत्न ही अच्छा लगता है।

997। अभिलाषायें जो पूरी नहीं होतीं मानव को दुखी करती हैं उनकी अनुकूलता से प्रसन्नता मिलती है यह सब भाग्य का ही तो दोष है। हर समय सब तरह की परिस्थितियों से समझौता करना पडता है।

998। प्रतिदिन का पाँच मिनट का किया हुआ ध्यान यदि सच्चाई से किया गया है तो अंत में परम शांतिदायक होगा।

999। एक अबोध बालक माता पिता का ही तो अंश होता है उसमें चौदह शक्तियां सोलह संस्कार तथा बयालीस गुण होते हैं जिसमें मां के ही छत्तीस गुण होते हैं इसलिये बच्चा मां का ही दूसरा रूप होता है तथा नब्बे प्रतिशत बच्चे मां को ही जाते हैं इसलिये मां की तरफ ही बच्चे का ज्यादा झुकाव होता है ।

1000। हम चाहे कितने ही बडे बडे वातानुकूलित बंगलों में होटलों में रहें बडी गाडियों में घूमें तथा धन संपत्ति एकत्रित करें लेकिन सबको एक दिन मिट्टी में मिल जाना है कुछ भी साथ नहीं ले जाना है सब भौतिक वस्तुओं से आसक्ति हटा कर प्रभु के ध्यान में लगना चाहिये ताकि हमारा कल्याण हो सके हमें जन्म मरण से छुटकारा मिले ।

1001। जो प्रभु के भक्ति रस में तथा प्रभु के ध्यान में हमेशा आत्म विभोर रहता है उसके चेहरे पर एक अलग ही तेज व प्रसन्न मुद्रा छिटकी रहती है जिससे उसके चेहरे की आभा आकर्षक हो जाती है ऐसी आभा के दो भक्त आपस में जब मिलते हैं अजनबी होते हुये भी एक दूसरे को प्रसन्न मुद्रा में ही उत्तर देते हैं तथा राम राम करते हैं यह सब प्रभु की कृपा तथा आशीर्वाद से ही होता है ।

1002। आसक्ति व तृष्णा से रहित व्यक्ति का विवेक जाग्रत होता है इसी से वह कमल की भांति निर्लिप्त व निर्मल रहता है और वह परमार्थ का अधिकारी होता है ।

1003। यह "आत्मा" ही तो है जो अनादि काल से अब तक भगवान विष्णु ब्रह्मा शिव कृष्ण राम तथा सब व्यक्तियों और प्राणियों में व्याप्त है और आगे भी रहेगा। सम्पूर्ण पृथ्वी व ब्रह्मांड में सब आत्मा का ही खेल है ये ही सबका आधार है।

1004। निस्वार्थ असहायों की सेवा करना परम भक्ति है हृदय के सब विकार दूर होते हैं पवित्रता आती है विवेक जाग्रत होता है मुक्ति का मार्ग मिलता है ।

1005। जो लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से चलचित्र टीवी पत्र पत्रिकाओं व विज्ञापनों द्वारा समाज में अश्लीलता परसते हैं नयी पीढी के चरित्रों का हनन करते हैं वे राष्ट्र व समाज के दुश्मन हैं उनका संपूर्ण बहिष्कार ही करना चाहिये।

1006। अतिशय भोलेपन में शुद्धात्मा में प्रभु का वास होता है जन्मजात शिशु का हृदय एकदम पवित्र व सांसारिक विकारों से दूर होता है वह सच्चिदानन्द परब्रह्म परमात्मा का ही रूप होता है बडे होने पर माया के आवरण के साये में उसका हृदय कलुषित हो जाता है विकार उसे घेर लेते हैं और वह मायामय हो जाता है ।

1007। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है जिस व्यक्ति के अन्दर समता नम्रता उदारता तथा आंतरिक प्रसन्नता ये चार गुण होते हैं वह मेरा परम भक्त है संसार के सब कर्त्तव्यों को करते हुये भी कर्म बंधनों से मुक्त रहता है।

1008। अहंकार व संसार के प्रति आसक्ति दोनों ही भक्ति मार्ग में बाधक हैं विवेक और संसार के प्रति वैराग्य दोनों ही भक्ति मार्ग में सहायक हैं ।

1009। यज्ञ तप दान और समर्पण ये सब परम ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के लिये बडे सोपान हैं इन्हीं पर हमारे सनातन धर्म की संस्कृति की नींव स्थापित है ।

1010। मायामय संसार के विचार जब भी हमारे हृदय पर हावी हों उसे विचलित करें उसे अपवित्र बनायें हमें एकांत में जाकर जोर जोर से ताली बजाकर हृदय से कीर्त्तन कर प्रभु का ध्यान करना चाहिये सब विकार दूर हो जायेंगे और परम शांति का अनुभव होगा ।

1011। दूसरे प्राणियों की पीडा को अपनी ही पीडा समझकर जो द्रवित होता है उसकी पीडा को दूर करता है वह सच्चा साधु व संवेदनशील व्यक्ति है ।

1012। जिस सुखी व्यक्ति को दुखी व्यक्ति की चिन्ता नहीं रहती , समाज के लिये उसका जीवन ही व्यर्थ है।

1013। वासना व सच्चे प्रेम में उतना ही अन्तर है जितना एक सर्प में व मणि में होता है ।

1014। परमात्मा ही सब स्थानों में विद्यमान है दृश्य व अदृश्य सभी में वह व्याप्त है उसके बिना कुछ भी नहीं है ।

1015। आस्था ही प्रारंभिक साधन है प्रभु प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है सत्संग भजन कीर्त्तन आराधना से प्रेरणा मिलती है उससे आत्मज्ञान सुलभ होता है ।

1016। कलयुग में प्रभु को पाने के लिये भक्तिमार्ग ही सुलभ है ज्ञान मार्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिये उत्तम व सरल नहीं है।

1017। सच्चा कलाकार हमेशा सांसारिक विकारों से दूर रहता है भावभक्ति युक्त होने के कारण उसका हृदय पवित्र होता है प्रभु के हमेशा निकट रहता है ।

1018। अग्नि घी से अधिक प्रज्वलित होती है भोगों से कामनायें बढती हैं व्यक्ति को पापों की ओर अग्रसर करती हैं।

1019। सदियों से बुराई किसी भी युग में बलवान रही हो पर उस पर अच्छाई की ही विजय हुई है रामजी की रावण पर विजय इसी बात की द्योतक है असत्य पर सत्य की ही विजय होती है दशहरा इसी बात की याद दिलाता है ।

1020। कला महान व पवित्र होती है अपनी गति के साथ कलाकार को भी महानता व पवित्रता प्रदान करती है साथ ही हृदय में प्रेम तथा दया का निर्माण भी करती है ।

1021। जीवन में धैर्य संयमता सज्जनता संवेदनशीलता व समर्पण हो तो मनुष्य नर से नारायण बन सकता है वह मनुष्य प्रभु की कृपा का विशेष प्रात्र होता है प्रभु प्राप्ति के द्वार उसके लिये खुले रहते हैं ।

1022। कुसंगत तथा अपराधी पुरुषों की संगत से इस जन्म में तथा आगे आने वाले जन्मों में कभी भी उद्धार नहीं होता साधु पुरुषों की संगत से इस जन्म में तथा आने वाले जन्मों का भी उद्धार हो जाता है।

1023। सत्य शाश्वत होता है न बोलकर भी सब बोलता है इसका प्रभाव सारे विश्व पर होता है ।

1024। आत्मविश्वास से आस्था से किया हुआ कार्य अवश्य सफल होता है उसमें आत्मिक बल व पवित्रता रहती है साथ ही प्रभु की कृपा व आशीर्वाद का प्रभाव रहता है ।

1025। मन आत्मा का संगीत है जितना संगीत मधुर होगा उतना ही प्रभु निकट होगा ।

1026। जिस देश की जनता में चरित्रबल स्वाभिमान और देशभक्ति विद्यमान है उसे विश्व की कोई भी शक्ति झुका नहीं सकती ।

1027। जब जीवन की सारी आशायें धूमिल हो जाती हैं निराशा उसे सफल नहीं होने देती प्रभु का नाम लेकर परिश्रम व लगन के साथ हमेशा प्रयत्नशील रहने वाला सदैव सफल रहता है।

1028। दया भगवान की देन होती है हृदय को पवित्र रखती है माया संसारी देन होने के कारण संसार में बांधे रहती है और मनुष्य को जन्म जन्मान्तर तक भटकाती रहती है ।

1029। वह दिन बहुत ही सुखद होगा जब मिश्रित संस्कृति हमारे राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जायेगी ।

1030। प्रभु का हरघडी चिंतन करना उसमें खोये रहना , पूर्ण रूप से समर्पित हो जाना ही सच्ची साधना है ।

1031। निरंतर प्रभु का हृदय से स्मरण करने से हृदय में चेतनता आती है किसी भी प्राणी के प्रति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष कुमार या कुमारी किसी भी प्रकार की वासना नहीं आती अपितु उनमें माता पिता पुत्र पुत्री का सा बोध होता है एक प्रकार का मीठा प्रेम उमड पडता है यह सब प्रभु की कृपा व आशीर्वाद का ही फल होता है ।चारों ओर प्रभु का वास जान पडता है।

1032। निष्क्रियता पुरुष के जीवन को निष्क्रिय व अंधकारमय बना कर नष्ट कर देती है ।

1033। विश्व में निशस्त्रीकरण तभी संभव हो सकता है जब प्रत्येक राष्ट्र भयमुक्त हो किसी भी राष्ट्र में विश्व प्रभुत्व की भावना न हो सब राष्ट्र विश्व के प्रति अपना दायित्व समझते हों ।

1034। राष्ट्रीयता की भावना हमेशा विश्व हित में ही नहीं होती , स्वार्थपूर्ण राष्ट्रीय भावना दूषित हो सकती है।

1035। शत्रु और दुष्टों से इतना भय नहीं होता जितना कपटी मित्र से होता है वह मित्रता की आड में कभी भी धोखा दे सकता है। उसका भरोसा नहीं करना चाहिये।

1036। सभी ज्ञानी व महापुरुष जानते हैं ईश्वर हर प्राणी के हृदय में व उसके रोम रोम में व्याप्त हैं इतना ही नहीं वह जड चेतन सम्पूर्ण पृथ्वी व ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं सब उन्हीं से ओत प्रोत हैं ।

1037। जो सफलता धर्म सत्य सज्जनता से मिलती है वह ईश्वरीय है बल उत्साह व वीरता से नहीं मिल सकती ।

1038। प्रभु का चिंतन करने वाला प्रसन्न मन व निर्भय रहता है संसार का चिंतन करने वाला दुखी शोक ग्रस्त व अशान्त रहता है ।

1039। वर्तमान युग में भौतिक साधनों द्वारा यंत्रों का निर्माण केवल क्षणिक उन्नति ही है जो विनाशकारी है। पूर्व काल में धर्म का सहारा लेकर आध्यात्मिक साधनों व मंत्रों द्वारा जो उन्नति हुई वह जन्म जन्मान्तर के लिये कल्याणकारी है परम शान्ति दायक है ।

1040। आदर्शवादी ध्यानस्थ महापुरुष अपनी आध्यात्मिक गन्ध से समाज को सराबोर करते रहते हैं ।

1041। अत्याचारी दुराचारी भ्रष्टाचारी समाज के सामने अपने आपको आदर्श रूप में रखना चाहता है।

1042। कौवा जिस प्रकार मांस विष्ठा तो खा लेगा पर चलेगा अकडकर उसी प्रकार कपटी व दुर्जन व्यक्ति समाज के सामने अपने को सज्जन व धर्मात्मा के रूप में प्रस्तुत करते हैं ।

1043। सांसारिक सुख माया तथा भौतिक आवरण से युक्त होने के कारण इस जन्म में तथा आने वाले जन्मों में दुखदायी होते हैं पर आत्मिक सुख सद्कर्मों व आध्यात्मिक आवरण से युक्त होने के कारण जन्म जन्मान्तर तक सुखकारी व कल्याणकारी होते हैं ।

1044। प्रेमी पुरुषों का कोई अप्रिय नहीं होता, सामर्थ्यवान के लिये कुछ भी काठिन नहीं,परिश्रमी के लिये कोई लक्ष पूरा नहीं होता और विद्वानों के पास सब समस्याओं का हल रहता है ।

1045। पेड पौधे भी अन्य प्राणियों की तरह हैं उनमें भी प्रभु का वास होता है दुख सुख का भास उन्हें भी होता है प्राणियों की भांति वे चल फिर नहीं सकते , अचल व मूक रहते हैं पाप पुन्य उन्हें नहीं छूते ।

1046। विद्वानों का जहां मान नहीं होता वह देश अज्ञानता व अधर्म से बोझिल नौका की तरह डूब जाता है ।

1047। विवेकी साधु व संत प्रभु में तल्लीन रहने वाले सदैव परम शांति व ईश्वरानन्द का अनुभव करते हैं ।

1048। अपना नश्वर शरीर ही तो पिछले और अबके जन्म के पापों को व दुखों को भोगता है यदि आत्म ज्ञान हो जाये प्रभु स्मरण से तो पुर्नजन्म से छुट जायेंगे ।

1049। निस्वार्थ प्रेम त्याग सेवा सज्जनता तथा सद्भावना से किसी के भी अंत:करण को वश में कर उसे अपना बना सकते हैं व हम उसके हो सकते हैं ।

1050। मानव जाति के लिये लोभ परमार्थ का सबसे बडा शत्रु है जिसने उस पर विजय पाली वह आदरणीय पात्र है।

1051। स्वंय को श्रेष्ठ समझना ही अज्ञानता का द्योतक है ।

1052। आत्म विश्वास में वह शक्ति है सब कठिनाईयों को बेधकर लक्ष प्राप्त कर लिया जाता है ।

1053। भाग्य बडा बलवान होता है कोई भाग्यवान सुख संपत्ति से संपन्न है उसके कुत्ते भी गाडियों में घूमते हैं और कोई भूखा ही रहकर दम तोड देता है सर्दी में ठंड से व्याकुल सडक पर ही पडा रहता है जो सुख दुख में प्रभु की महिमा का गुणगान करता है उसे भाग्य कभी नहीं सताता है ।

1054। अभिलाषाओं से रहित व्यक्ति निर्धन होते हुये भी धनी होता है ।

1055। हृदय में शंका होने से व्यक्ति अपने पुरुषार्थ को भूल जाता है मित्र भी शत्रु बन जाते हैं उसका जीवन भ्रमित हो जाता है अस्थिरता आ जाती है ।

1056। निस्वार्थ भाव से किसी का आदर सम्मान करना मानवीय महत्व की वस्तुयें हैं ये सब ईश्वर प्रदत्त गुण हैं व सबको प्रेरणा देने वाले हैं ।

1057। सत्कर्म हमें जीवन में हमेशा सुख देते हैं दुष्कर्म तो दुख ही देने वाले होते हैं हम क्यों न सत्कर्म ही किया करें ?

1058। छल व कपट पूर्ण विद्वता से निश्छल व निष्कपट सरल ज्ञान उत्तम व लाभकारी होता है ।

1059। जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति संसार के सब सुखों को एकत्रित करता है अनेक कठिनाईयों को झेलता है दूसरों का अनिष्ट कर स्वार्थ के लिये उपभोग करता है यही सब यदि निस्वार्थ भाव से करे तो उसका जीवन सार्थक हो जायेगा।

1060। "ज्ञान" प्रकाश है "अज्ञान" अंधेरा है हृदय में भगवान रूपी ज्ञान के प्रकाश को प्रज्वलित करें ताकि मुक्ति व निवार्ण का मार्ग खोज सकें ।

1061। कर्मण्यता फलदायी होती है जीवन को सुधार कर उसको दिशा देती है और जीवन सुखी होता है ।

1062। "मुक्ति" व "निर्वाण" जीवन भर के सद्‌कर्मो धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में की गई तपस्याओं , निस्वार्थ भाव से की गई भक्ति की पराकाष्ठा का ही तो फल है , पुर्नजन्म नहीं होता है।

1063। मुक्ति पाने वाला व्यक्ति परमेश्वर का ही रूप होता है जो समय व काल दोनों पर विजय पा लेता है ।

1064। कामान्ध व्यक्ति स्वार्थान्ध होता है ।

1065। अधिकार व कर्त्तव्य जीवन के दो पहलू हैं दोनों में संतुलन बना रहना अत्यावश्यक है तभी वे हितकर हो सकते हैं।

1066। दुर्गुणों का अनुसरण करने वाला आगे वाले जन्मों को भी नष्ट कर देता है सद्‌गुणी अपने जीवन का व सब जन्मों का उद्धार कर लेता है।

1067। सच्चे ज्ञान में सत्य का वास होता है ।

1068। दीपावली पर लोग दिये जलाते हैं सजावट करते हैं यह सब ऊपरी सजावट है हृदय के अन्दर की सजावट व प्रकाश के लिये ज्यादा महत्व देना चाहिये , अन्दर के विकारों व दोषों को सत्संग आराधना व भगवान नाम द्वारा दूर कर हृदय में प्रभु के नाम की ज्योति प्रज्वलित कर अपने हृदय की ज्योति को उस परब्रह्म परमात्मा की ज्योति में विलीन करना चाहिये तभी दिवाली सार्थक होगी ।

1069। सत्कर्मों द्वारा प्राप्त किया धन बुद्धि को शुद्ध करता है वह धन पारस जैसा है उपयोगी व फलीभूत होने वाला है।

1070। दैनिक जीवन के सद्‌कर्म व दुष्कर्म ही अंत में आने वाले जन्मों का भाग्य निर्धारित करते हैं ।

1071। विश्व में जब तक राष्ट्रों का अति बलवान व अतिशक्तिहीन होने का कम चलता रहेगा “बिल लादेन” जैसे व्यक्तियों का जन्म होता रहेगा।

1072। धन उपयोग के दो साधन हैं एक है दान करना दूसरा है सही उपयोग सही कामों में, अन्यथा व्यर्थ है ।

1073। आत्मा शाश्वत है तन शाश्वत नहीं है तन आज है कल नहीं है फिर भी मनुष्य उसे सजाने संवारने में लगा रहता है जो भी आत्मा को सजाता है संसार से जन्म जन्मान्तर तक के लिये छूट जाता है , प्रभु उसे मिल जाते हैं ।

1074। सुन्दर व बुद्धिमान प्रभु की विशेष कृपा का पात्र है प्रकृति से उसे वरदान प्राप्त है सोने में सुहागा कर सकता है और सम्पूर्ण जीवन में कभी भी असफल नहीं होता ।

1075। विवेक और निर्मल बुद्धि से जो भावना उत्पन्न होती है वही सुन्दर सुखद व कल्याणकारी होती है ।

1076। निर्दोष मित्र की आशा करना जीवन भर निराश रहने के बराबर है।

1077। मोह और मायारूपी हृदय के अंधकार को विवेक और निर्मल बुद्धि रूपी प्रकाश द्वारा दूर कर हृदय में प्रकाश को प्रज्वलित किया जा सकता है ।

1078। धर्म व ईश्वर में विश्वास हमेशा फलदायी होता है परन्तु अंधविश्वास हमेशा सम परिस्थितियों के अनुकूल न होने के कारण सीमाओं से बाहर भी काम करा लेता है परिणामस्वरूप मुक्ति के स्थान पर व्यक्ति दुष्परिणामों का शिकार हो जाता है।

1079। सुन्दर बच्चों की मुस्कराती विनम्र आंखों में , सुन्दर फूलों में , भोले मासूम प्राणियों में प्रभु का दर्शन कर मन प्रसन्न हो जाता है ।

1080। सच्चे ज्ञान की परीक्षा की जाये तो उसका परिणाम सत्य ही है ।

1081। ज्ञानी पुरुष हमेशा संसार में रहकर भी प्रभु को कभी नहीं भूलता कमल की भांति रहता है।

1082। साधुता सरलता नम्रता तथा सहिष्णुता जैसे गुणों वाला व्यक्ति आत्मज्ञानी है ये सब गुण आत्मानुभव की धरोहर हैं।

1083। जन्म से ही व्यक्ति का जैसा स्वभाव रहता है वही उसका चरित्र व व्यक्तिगत पूंजी होती है अच्छी हो या बुरी। समाज में रहने से बदलाव आ सकता है पर प्राकृतिक स्वभाव नहीं बदल सकता ।

1084। कुसंगत से बडे बडे ऋषि मुनि तथा महापुरुष भी डिग जाते हैं इस पाप से बचना चाहिये।

1085। वृद्ध शरीर भी पुराने कपडे की तरह है पता नहीं कब फट जायेगा शरीर की ममता छोडकर भगवान नाम में लगा दो ताकि तुम्हारा कल्याण हो जाये और ये शरीर फिर न धारण करना पडे ।

1086। शारीरिक सब सुख सुविधाओं के और अगाध संपत्ति के होने पर भी यदि हृदय में शांति नहीं है तो सब व्यर्थ है हृदय की शान्ति के लिये सत्संग व आध्यात्मिक साधनों का सहारा लेना पडता है भौतिक साधन तो अग्नि में घी का कार्य करते हैं ।

1087। भद्र पुरुषों की संगति अमृत तुल्य है व्यक्ति विष व अमृत में से क्या चुनता है यह उसके स्वभाव पर निर्भर है।

1088। स्वधर्म पालन श्रेष्ठ है पर राष्ट्र धर्म उससे भी श्रेष्ठ है , उसका पालन करने वाला सराहनीय ही होगा।

1089। निस्वार्थ भाव से समाज सेवा करने वाला व वाक्पटु जो मनोवैज्ञानिक रूप से भी निपुण है समाज व व्यक्ति के बीच संबंध स्थापित कर सकता है व उन्नति का मार्ग निर्धारित कर सकता है ।

1090। मायारूपी जाल विश्व में सर्वत्र छाया हुआ है जो उसमें से निकल जाता है वही प्रभु को पा सकता है ।

1091। टी वी पर आने वाले धारावाहिक प्रोग्राम अधिकतर धनवान व संपन्न परिवारों के इर्द गिर्द घूमते हैं उन्हीं के जीवन के बारे में प्रकाश डालते हैं परन्तु निर्धन परिवारों की निर्धनता उनके दुख दर्द पारिवारिक कष्ट हृदय की चुभन तथा उनकी संवेदनाओं को कौन समाज के सामने रखेगा आज के धारावाहिक निर्देशक यह सब भूल गये हैं जबकि भारत की जनता में **80** प्रतिशत निर्धन परिवारी जन रहते हैं । क्या उनका कोई मूल्य नहीं है ।

1092। जीवन की उन्नति व पतन का आधार अच्छी व बुरी संगत पर निर्भर करता है ।

1093। मीठे शब्दों का बहुत महत्व होता है इनसे अपना हृदय तो पवित्र व शांत होता है दूसरों का भी हृदय पवित्र व शांत हो जाता है अच्छे वातावरण का निर्माण होता है जैसे कोयल सबके मन को मोह लेती है न किसी से कुछ लेती है न देती है पर सुन्दर वातावरण का निर्माण करती है।

1094। मानव और समाज का अटूट संबंध है वह पानी की बूंद और समुद्र जैसा है ।

1095। मायावी पुरुष संसार रूपी भवसागर में डूब जाते हैं प्रभु चिन्तन करने वाले तर जाते हैं ।

1096। संकल्प और पुरुषार्थ हृदय को पवित्र कर प्रेरणा का स्त्रोत बनाते हैं आलस्य जीवन को नीरस व अकर्मण्य बना देता है ।

1097। भक्ति का समाज में ढोंग करके उसका निरादर मत करो अपने मन को पवित्र करके प्रभु को प्राप्त करो।

1098। पाखंड युक्त भक्ति निरर्थक होती है उस से प्रभु को कभी नहीं पा सकते ।

1099। कठोरता निर्दयता अहंकार का जिसमें वास है वह दरिद्री व विनाशकारी है नम्रता दया करुणा व मानवता यही अच्छे गुण हैं किसी को भी धनी बना देते हैं सर्वदा कल्याणकारी होते हैं ।

1100। आत्मज्ञानी स्वंय को प्रभु में ऐसे आत्मसात कर लेता है जैसे नदी के समुद्र में मिलने पर दोनों का पानी एकसा हो जाता है।

1101। संसार में परम शांति प्राप्त ब्रह्मज्ञानी ही सुखी हैं या फिर जो निर्लज्ज हैं वे सुखी हैं।

1102। हृदय में शंका हो तो वाणी में भी शंका आ जाती है ऐसा व्यक्ति सबको शंका की दृष्टि से देखने लगता है विश्वास के अभाव में उसकी स्थिति और भी गिर जाती है।

1103। बुरा आचरण विश्वासघात व शास्त्रों के विरुद्ध आचरण हमेशा अपने व समाज दोनों के लिये घातक सिद्ध होता है।

1104। जिसके अंत:करण में प्रभु का वास है वही भक्ति की महिमा जानता है सच्चे ज्ञान से वह प्रभु को पा लेता है ।

1105। माया रूपी रेखा ही आत्मा परमात्मा को अलग करती है वैसे दोनों ही एक हैं पानी में पडी लाठी पानी को दो भागों में बांट देती है पर पानी को बांटा नहीं जा सकता ।

1106। संसार को ईश्वर के रूप में देखना भौतिकवाद में अध्यात्मवाद को ढूंढना है और ईश्वर को संसार के रूप में देखना अध्यात्मवाद में भौतिकवाद को देखना है ।

1107। निष्क्रियता सक्रियता पर हावी होती है तो परिणाम बुरा ही होगा , जबकि उसे अच्छा व सक्रिय होना चाहिये ।

1108। कछुये की तरह आपत्ति आने पर अपने अंगों को समेट लेने वाला व्यक्ति अपने मन व इन्द्रियों को अपने वश में कर लेता है सभी सांसारिक वासनाओं व कामनाओं पर विजय पा लेता है ।

1109। आत्म सत्ता व प्रभु को जानने का मार्ग वेद ही दिखाते हैं मानवता की सेवा करना सर्वस्व न्यौछावर करना यह सब शिक्षायें हमें वेदों से ही मिलती हैं ।

1110। आत्म विश्वास व दृढ निश्चय की प्रेरणा से ही व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है ।

1111। मृत्यु के पश्चात् दुनियांदारी व इस जन्म के सब साथी छूट जायेंगे जीवन की नौका जो भवसागर से पार कराती पापों के बोझ से जर्जर हो गई है हे प्रभु ! अब तेरा ही सहारा है मेरी नौका बीच भंवर में है , कहाँ जाऊं ? शरण में ले लो ।

1112। कोई भी उपदेशक जो कहता है यदि उस पर स्वंय आचरण नहीं करता है तो उसके उपदेश कभी भी हृदय ग्राही नहीं हो सकते , किसी के हृदय पटल पर प्रभाव नहीं डाल सकते ।

1113। शास्त्रों का अनभिज्ञ , पूजा श्लोकों का अनजान व्यक्ति, गुरु कृपा से विमुख कैसे अपना कल्याण कर सकता है , क्या मुट्‍ठी भर शक्कर से समुद्र का पानी मीठा हो सकता है ? प्रभु मैं तो तेरा ही हूं सब कुछ तुझ पर छोड दिया है ।

1114। वायु हर रिक्त स्थान में रहती है बिना वायु के रिक्त स्थान रह ही नहीं सकता , हर प्राणी में ईश्वर का वास रहता है और ईश्वर के बिना किसी वस्तु का अस्तित्व रह ही नहीं सकता है।

1115। जो बात अपनी इच्छा के विरूद्ध हो उसे प्रभु का प्रसाद ही समझना चाहिये सहर्ष स्वीकार कर लो प्रभु हमेशा कल्याण ही करेंगे ।

1116। स्वभाव से मानव पाप को जल्दी ग्रहण करता है जो नहीं करता वह संत है जो मुक्ति ढूंढता है उसे ईश्वरीय अनुभूति प्राप्त होती है ।

1117। पुस्तकें अच्छे ज्ञान का स्त्रोत होती हैं एक अच्छे मित्र का काम करती हैं नीरस समय में हमारा साथ देती हैं ।

1118। धार्मिक आस्था यदि जीवन का आधार बन जाये तो जीवन के सब संताप दूर हो जायेंगे ।

1119। मानव जीवन का मूल मुक्ति है न कि चौरासी योनियों में भटकना , उनकी परिक्रमा करना ।

1120। जीवन के अन्तिम दिनों में सौभाग्यवश सत्संग हरि भजन व धर्म की आस्था यदि हो जाये तो आगे के सब जन्म सुधर जाते हैं ।

1121। प्रभु का ध्यान उपासना व प्रार्थना कोई धोखा नहीं है उतना ही सच्चा व सार्थक है जितना हमारा यह जीवन ।

1122। भद्र पुरुष व महिलायें जो मन्दिर में जाकर या एकांत में माला जपते हैं ध्यान लगा कर बैठते हैं वे जानते हैं प्रभु ही सब कुछ हैं संसार की सभी वस्तुयें सारहीन हैं ।

1123। शक्ति सुन्दरता ज्ञान प्रभाव प्रताप तथा धन सम्पत्ति सब प्रभु की ही देन है जो लोग इनको अपना जान अभिमान में रहते हैं बडी भारी भूल करते हैं अज्ञानी ही हैं ।

1124। जब प्रभु के प्रेम की रसधारा अश्रुओं के रूप में नेत्रों से बह निकलती है हृदय के सब दुर्गुण विकार समाप्त हो जाते हैं गंगाजल की तरह पवित्र हो जाता है अगाध प्रभु की भक्ति के बिना कुछ नहीं रहता ।

1125। पराक्रमी शक्तिशाली व सम्पन्न व्यक्ति को भी शक्ति हीन व लाचार होने पर भाग्य के सामने झुकना पडता है ।

1126। दैवी सम्पदा प्राप्त पुरुषों की विचारधारा कर्म व निष्ठा सब में दैवी प्रकृति का वास होता है जो मुक्तिदायक है ।

1127। मन और आत्मा का भेद मिटाने तथा सहजता निर्माण करने में ही महापुरुष की महानता विद्यमान रहती है ।

1128। जप तप दान व सत्संग प्रदर्शन की वस्तुयें नहीं हैं ईश्वर प्राप्ति के मार्ग हैं ।

1129। "सत्य" प्रत्येक व्यक्ति व समाज दोनों के लिये कल्याणकारी होता है सर्वोत्कृष्ट है उसका कोई विकल्प नहीं है।

1130। ज्ञान प्रचारक बहुत बडा दानी है समाज में चेतनता जाग्रत करता है उसकी उत्तरोत्तर उन्नति में सहायता करता है ऐसे भव्य पुरुष का अमूल्य योगदान समाज के लिये अत्यंत सराहनीय होता है।

1131। जिसकी विद्वता सतोगुणी होती है वह इस जीवन से मुक्त हो जाता है ।

1132। वृक्ष का तना जिस प्रकार वृक्ष की प्रत्येक शाखा का पोषण कर उन्हें पल्लवित कर हरा भरा रखता है परब्रह्म परमात्मा भी उसी तरह पृथ्वी व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का पालन पोषण कर उनको जीवन प्रदान करता है।

1133। क्षमा अंत:करण की वह अभिव्यक्ति है जो करने वाले तथा पानेवाले दोनों को दयारूपी धागे में पिरोकर प्रेम व शांति प्रदान करती है उनके मन के संतापों को हर लेती है ।

1134। मायामय हृदय अपवित्र व दुर्गुणों से युक्त होता है जो प्रभु से हमेशा दूर रखता है मायारहित ही मुक्ति का साधन है।

1135। मन ही मुक्ति का व चौरासी लाख योनियों की परिक्रमा का कारण होता है ।

1136। भक्तिरस में डूबे दयावान पुरुषों का जो सदा ही निस्वार्थ सेवा के लिये तत्पर रहते हैं उनकी चरण वन्दना करनी चाहिये । सभी के लिये वे वन्दनीय हैं ।

1137। क्षणिक शंका का समाधान तो तुरन्त दूर हो जाता है पर दीर्घकालीन शंका जीवन को भ्रांतिमय बना देती है मित्र भी शत्रु समान दिखने लगते हैं स्वंय में व अन्य सब में दोष ही दिखते रहते हैं ।

1138। कर्त्तव्यपरायणता जीवन है और अकर्मण्यता मरण है ।

1139। स्वार्थपूर्ण दृष्टि से किया गया उपकार निरर्थक व पाप होता है ।

1140। भोलेभाले निश्छल सरल दयावान सभी के प्यारे होते हैं। श्रद्धालु व भक्त होते हैं ।

1141। दया मानव का प्रिय धन है निर्वाण का मार्ग प्रशस्त करती है जबकि माया तो संसार में बांधती है ।

1142। शुभ सत्य व धार्मिक कर्मो के लिये जब हार्दिक वेदना होती है उसका आधार सात्विक व ईश्वरीय होने के कारण हृदय पवित्र हो जाता है संसार से विरक्ति में सहायक होती है ।

1143। शुभ कर्मो पर आधारित "आन" सभी संबंधित व्यक्तियों के लिये लाभकारी होती है सफलता की द्योतक होती है।

1144। सब वस्तुओं और प्राणियों में ममता और आसक्ति रखकर व्यक्ति स्वंय सब कष्टों को आमंत्रित करता है दुखी रहता है शान्ति पाने के लिये सब कुछ त्याग देना ही एक मात्र औषधि है ।

1145। अहंकार व क्रोध दोनों ही मानव के सबसे बडे शत्रु हैं दोनों ही संसार की आपदाओं व कष्टों को आमंत्रित करते हैं इनसे सम्पूर्ण जीवन अंत समय तक दुख की ज्वाला में जलता रहता है ।

1146। मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य सम्पूर्ण विश्व से दुर्गुणों के साये को मिटाकर सद्‌गुणों की स्थापना करना है ।

1147। भारी वर्षा जनित जलस्तर एकसा होता है ईश्वर का प्रेम भी सब के लिये एकसा ही होता है वे सभी को सम दृष्टि से देखते हैं ।

1148। मानव जीवन ही मुक्ति का द्वार होता है जो बडे भाग्य से मिलता है प्रभु को नहीं जाना तो अवसर चूक जायेगा।

1149। मनुष्य मात्र की सेवा सत्कर्म सर्वश्रेष्ठ पूजा है।

1150। हृदय में जब क्रोधाग्नि प्रज्वलित होती है सारे अच्छे गुण प्रवृत्तियां लोप होकर दुर्गुणों का वास हो जाता है ।